

श्री शङ्कराचार्य अष्टोत्तर शतनामादि

श्री शङ्कर तत्त्वप्रसार अभियानम्
श्रीश्री जगद्गुरु शङ्कराचार्य महासंस्थानम्
दक्षिणाम्नाय श्रीशारदापीठम्, शृङ्गेरि - ५७७१३९

एकश्लोकी

किं ज्योतिस्तव भानुमानहनि मे रात्रौ प्रदीपादिकं
स्यादेवं रविदीपदर्शनविधौ किं ज्योतिराख्याहि मे ।
चक्षुस्तस्य निमीलनादिसमये किं धीर्धियो दर्शने
किं तत्राहमतो भवान् परमकं ज्योतिस्तदस्मि प्रभो ॥

श्रीगुरुवन्दनम्

शङ्कारूपेण मच्चित्तं पङ्कीकृतमभूद्यया ।
किङ्करी यस्य सा माया शङ्कराचार्यमाश्रये ॥ १ ॥

प्रह्लादवरदो देवो यो नृसिंहः परो हरिः ।
नृसिंहोपासकं नित्यं तं नृसिंहगुरुं भजे ॥ २ ॥

श्रीसच्चिदानन्द शिवाभिनवनृसिंहभारत्यभिधान् यतीन्द्रान् ।
विद्यानिधीन् मन्त्रनिधीन् सदात्मनिष्ठान् भजे मानवशम्भुरूपान् ॥ ३ ॥

सदात्मध्याननिरतं विषयेभ्यः पराङ्मुखम् ।
नौमि शास्त्रेषु निष्णातं चन्द्रशेखरभारतीम् ॥ ४ ॥

विवेकिनं महाप्रज्ञं धैर्यौदार्यक्षमानिधिम् ।
सदाभिनवपूर्वं तं विद्यातीर्थगुरुं भजे ॥ ५ ॥

अज्ञानां जाह्नवीतीर्थं विद्यातीर्थं विवेकिनाम् ।
सर्वेषां सुखदं तीर्थं भारतीतीर्थमाश्रये ॥ ६ ॥

विद्याविनयसम्पन्नं वीतरागं विवेकिनम् ।
वन्दे वेदान्ततत्त्वज्ञं विधुशेखरभारतीम् ॥ ७ ॥

श्री शारदा भुजङ्ग प्रयाताष्टकम्

सुवक्षोजकुम्भां सुधापूर्णकुम्भां प्रसादावलम्बां प्रपुण्यावलम्बाम् ।
सदास्येन्दुबिम्बां सदानोष्ठबिम्बां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ १ ॥

कटाक्षे दयार्द्रां करे ज्ञानमुद्रां कलाभिर्विनिद्रां कलापैः सुभद्राम् ।
पुरस्त्रीं विनिद्रां पुरस्तुङ्गभद्रां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ २ ॥

ललामाङ्कफालां लसद्गानलोलां स्वभक्तैकपालां यशः श्रीकपोलाम् ।
करे त्वक्षमालां कनत्रललोलां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ३ ॥

सुसीमन्तवेणीं दृशा निर्जितैणीं रमत्कीरवाणीं नमद्वज्रपाणिम् ।
सुधामन्थरास्यां मुदा चिन्त्यवेणीं भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ४ ॥

सुशान्तां सुदेहां दृगन्ते कचान्तां लसत्सल्लताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम् ।
स्मृतां तापसैः सर्गपूर्वस्थितां तां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ५ ॥

कुरङ्गे तुरङ्गे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे मराले मदेभे महोक्षेऽधिरूढाम् ।
महत्यां नवम्यां सदा सामरूपां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ६ ॥

ज्वलत्कान्तिवह्निं जगन्मोहनाङ्गीं भजन्मानसाम्भोजसुभ्रान्तभृङ्गीम् ।
निजस्तोत्रसङ्गीतनृत्यप्रभाङ्गीं भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ७ ॥

भवाम्भोजनेत्राजसम्पूज्यमानां लसन्मन्दहासप्रभावक्रचिह्नाम् ।
चलच्चञ्चलाचारुताटङ्ककर्णां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥ ८ ॥

सङ्कल्पः

ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं
सर्वेषां आस्तिकमहाजनानां
क्षेम-स्थैर्य-वीर्यविजय-अभय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृध्यर्थं,
समस्त-दुरितोपशान्त्यर्थं, समस्त-मङ्गल-अवाप्त्यर्थं, समस्त-अभ्युदयार्थं च
धर्म-अर्थ-काम-मोक्षारख्य चतुर्विधपुरुषार्थ-सिद्ध्यर्थं,
श्रीमच्छङ्कर-भगवत्पादाचार्याख्य सद्गुरु प्रसादसिद्ध्यर्थं,
श्रीसद्गुरुप्रसादेन सर्वेषां आस्तिकमहाजनानां सद्विद्या-सद्बुद्धि-प्राप्त्यर्थं,
चित्तशान्ति-सुख-सन्तोषादि-अभिवृध्यर्थं, देश-उपप्लव-निवृत्त्यर्थं,
श्रीमच्छङ्कर-भगवत्पादाचार्य प्रीत्यर्थं
श्रीमच्छङ्कर-भगवत्पादाचार्य अष्टोत्तर शतनाम पारायणं करिष्ये ॥

श्रीशङ्कर भगवत्पादाचार्य अष्टोत्तर शतनामावलिः

| | | | |
|-----------------------------|----|---------------------------|----|
| श्रीशङ्कराचार्यवर्याय नमः | | निर्मलात्मकाय नमः | |
| ब्रह्मानन्दप्रदायकाय नमः | | निर्ममाय नमः | ३५ |
| अज्ञानतिमिरादित्याय नमः | | निरहङ्काराय नमः | |
| सुज्ञानाम्बुधिचन्द्रमसे नमः | | विश्ववन्द्यपदाम्बुजाय नमः | |
| वर्णाश्रमप्रतिष्ठात्रे नमः | ५ | सत्त्वप्रधानाय नमः | |
| श्रीमते नमः | | सद्भावाय नमः | |
| मुक्तिप्रदायकाय नमः | | सङ्घातीतगुणोज्ज्वलाय नमः | ४० |
| शिष्योपदेशनिरताय नमः | | अनघाय नमः | |
| भक्ताभीष्टप्रदायकाय नमः | | सारहृदयाय नमः | |
| सूक्ष्मतत्त्वरहस्यज्ञाय नमः | १० | सुधिये नमः | |
| कार्यकार्यप्रबोधकाय नमः | | सारस्वतप्रदाय नमः | |
| ज्ञानमुद्राञ्चितकराय नमः | | सत्यात्मने नमः | ४५ |
| शिष्यहृत्तापहारकाय नमः | | पुण्यशीलाय नमः | |
| परिव्राजाश्रमोद्धर्त्रे नमः | | साङ्ख्ययोगविचक्षणाय नमः | |
| सर्वतन्त्रस्वतन्त्रधिये नमः | १५ | तपोराशये नमः | |
| अद्वैतस्थापनाचार्याय नमः | | महातेजसे नमः | |
| साक्षाच्छङ्कररूपधृते नमः | | गुणत्रयविभागविदे नमः | ५० |
| षण्मतस्थापनाचार्याय नमः | | कलिघ्नाय नमः | |
| त्रयीमार्गप्रकाशकाय नमः | | कालकर्मज्ञाय नमः | |
| वेदवेदान्ततत्त्वज्ञाय नमः | २० | तमोगुणनिवारकाय नमः | |
| दुर्वादिमतखण्डनाय नमः | | भगवते नमः | |
| वैराग्यनिरताय नमः | | भारतीजेत्रे नमः | ५५ |
| शान्ताय नमः | | शारदाह्वानपण्डिताय नमः | |
| संसारार्णवतारकाय नमः | | धर्माधर्मविभागज्ञाय नमः | |
| प्रसन्नवदनाम्भोजाय नमः | २५ | लक्ष्यभेदप्रदर्शकाय नमः | |
| परमार्थप्रकाशकाय नमः | | नादबिन्दुकलाभिज्ञाय नमः | |
| पुराणस्मृतिसारज्ञाय नमः | | योगिहृत्पद्मभास्कराय नमः | ६० |
| नित्यतृप्ताय नमः | | अतीन्द्रियज्ञाननिधये नमः | |
| महते नमः | | नित्यानित्यविवेकवते नमः | |
| शुचये नमः | ३० | चिदानन्दाय नमः | |
| नित्यानन्दाय नमः | | चिन्मयात्मने नमः | |
| निरातङ्गाय नमः | | परकायप्रवेशकृते नमः | ६५ |
| निस्सङ्गाय नमः | | अमानुषचरित्राढ्याय नमः | |

| | | | |
|---|----|---|-----|
| क्षेमदायिने नमः | | भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| क्षमाकराय नमः | | ज्ञानात्मकैकदण्डाढ्याय नमः | ९० |
| भव्याय नमः | | कमण्डलुलसत्कराय नमः | |
| भद्रप्रदाय नमः | ७० | गुरुभूमण्डलाचार्याय नमः | |
| भूरिमहिम्ने नमः | | भगवत्पादसञ्ज्ञकाय नमः | |
| विश्वरञ्जकाय नमः | | व्याससन्दर्शनप्रीताय नमः | |
| स्वप्रकाशाय नमः | | ऋष्यशृङ्गपुरेश्वराय नमः | ९५ |
| सदाधाराय नमः | | सौन्दर्यलहरीमुख्य-बहुस्तोत्र-विधायकाय नमः | |
| विश्वबन्धवे नमः | ७५ | चतुष्पष्टिकलाभिज्ञाय नमः | |
| शुभोदयाय नमः | | ब्रह्मराक्षसमोक्षदाय नमः | |
| विशालकीर्तये नमः | | श्रीमन्मण्डनमिश्राख्य-स्वयम्भूजय-सन्नुताय नमः | |
| वागीशाय नमः | | तोटकान्त्याय नमः | १०० |
| सर्वलोकहितोत्सुकाय नमः | | पद्मपादार्चिताङ्घ्रिकाय नमः | |
| कैलासयात्रा-सम्प्राप्त-चन्द्रमौलि-प्रपूजकाय नमः | | हस्तामलक-योगीन्द्र-ब्रह्मज्ञान-प्रदायकाय नमः | |
| काञ्चनां श्रीचक्राजारख्य-यन्त्रस्थापन-दीक्षिताय नमः | | सुरेश्वराख्य-सच्छिष्य-सन्न्यासाश्रमदायकाय नमः | |
| श्रीचक्रात्मक-ताटङ्क-तोषिताम्बा-मनोरथाय नमः | | नृसिंहभक्ताय नमः | |
| श्रीब्रह्मसूत्रोपनिषद्भाष्यादि-ग्रन्थकल्पकाय नमः | | सद्रत्नगर्भहेरम्ब-पूजकाय नमः | |
| चतुर्दिकतुराम्नाय प्रतिष्ठात्रे नमः | | व्याख्यासिंहासनाधीशाय नमः | |
| महामतये नमः | ८५ | जगत्पूज्याय नमः | |
| द्विसप्ततिमतोच्छेत्रे नमः | | जगद्गुरवे नमः | १०८ |
| सर्वदिग्विजयप्रभवे नमः | | श्रीमच्छङ्करभगवत्पादाचार्यस्वामिने नमः | |
| काषायवसनोपेताय नमः | | | |

मङ्गलम्

मङ्गलं गुरु श्री चन्द्रमौळीश्वरगे
 शक्तिगणपति शारदाम्बेगे शङ्कराचार्यरिगे ॥ ५ ॥
 कालभैरवगे काळि दुर्गिगे
 वीर धीर शूर हनुम मारुति चरणके ॥ १ ॥
 मल्लिकार्जुनगे चेल्व जनार्दनगे
 अम्बाभवानि कम्बद गणपति चंडिचामुंडिगे ॥ २ ॥
 विद्यारण्यरिगे विद्याशङ्करगे
 वागीश्वरिगे वज्रदेह गरुडाञ्जनेयरिगे ॥ ३ ॥
 तुङ्गभद्रेगे शृङ्गनिवासिनिगे

शृङ्गेरिपुरदोलु नेलेसिरुवन्थ शारदाम्बेगे ॥ ४ ॥
 सच्चिदानन्द शिव अभिनव नृसिंहभारतिगे
 चन्द्रशेखरभारती गुरु सार्वभौमरिगे
 चन्द्रशेखरभारती गुरु विद्यातीर्थरिगे
 चन्द्रशेखरभारती गुरु भारतीतीर्थरिगे
 चन्द्रशेखरभारती गुरु विधुशेखरभारतिगे ॥ ५ ॥